Received
8-3-99

तित्थयर

वर्ष २२ अंक-९ दिसम्बर १९९८

जैन भवन

'जिसे तुम मारना चाहते हो वह तुम ही हो।'

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard De-oiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur-261001 (U.P.)
Ph : 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax : 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Cal-700 007
Ph : 2384329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Calcutta-700 001
Ph : 2201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
Fax : 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

जैन भवन
कलकत्ता

वर्ष - २२ अंक - ९, दिसम्बर १९९८

संपादन
लता बोथरा

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : **Tithayar**, P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें -
Secretary, Jain Bhawan, P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US $ 20.00,
for three years : 160.00, US $ 60.00.
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US $ 160.00.

Published by Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007 and Printed by her
at Surana Printing Works, 205 Rabindra Sarani
Calcutta - 700 007, Phone : 239-4393

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	जैन धर्म का प्राचीन इतिहास	डा॰ हीरालाल जैन	२०१
२.	श्रावक जीवन	आचार्यश्री विजयभद्र गुप्त सूरीश्वरजी	२११
३.	राजा सम्प्रति	--	२१९
४.	उन्होंने खोजी है २९८ जैन जातियां	महावीर सांगलीकर	२२३

आवरण चित्र-पाकबिरा से ७वीं से १०वीं शताब्दी की प्राप्त जैन मूर्तियाँ एवं मन्दिर ।

Composed by
COMPU LASER GRAPHICS, 9, Srimani Ghat Lane, Rishra 712248, Hooghly.

एवं खु नाणिणो सारं, जं न हिंसइ किंचण ।
अहिंसा—समयं चेव, एयावन्तं वियाणिया ॥

— (सूत्र० श्रु० १ अ० ११ गा० १०)

ज्ञानी होने का सार ही यह है कि वह किसी भी प्राणी की हिंसा न करे । — मात्र इतना ही अहिंसा के सिद्धान्त का ज्ञान यथेष्ट है । और यही अहिंसा का विज्ञान है ।

जैन धर्म का प्राचीन इतिहास

डा हीरालाल जैन

दिगम्बर आम्नाय में गणभेद–

दिगम्बर मान्यतानुसार महावीर निर्वाण के पश्चात् ६८३ वर्ष की आचार्य परम्परा का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। कहा गया है कि तत्पश्चात् किसी समय अर्हद्बलि आचार्य हुए। उन्होंने पंचवर्षीय युगप्रतिक्रमण के समय एक विशाल मुनि-सम्मेलन का आयोजन किया, जिसमें सौ योजन के यति एकत्र हुए। उनकी भावनाओं से उन्होंने जान लिया कि अब पक्षपात का युग आ गया। अतएव, उन्होंने नंदि, वीर, अपराजित, देव, पंचस्तूप, सेन, भद्र, गुप्त, सिंह, जन्द्र आदि नामों से भिन्न भिन्न संघ स्थापित किए, जिनसे कि निकट अपनत्व की भावना द्वारा धर्म-वात्सल्य और प्रभावना बढ़ सके। दर्शनसार के अनुसार, विक्रम के ५२६ वर्ष पश्चात् दक्षिण मथुरा अर्थात् मदुरा नगर में पूज्यपाद के शिष्य वज्रनंदि द्वारा द्रावड़संघ की उत्पत्ति हुई। इस संघ के मतानुसार बीजों में जीव नही होता, तथा प्राशुक-अप्राशुक का कोई भेद नहीं माना जाता; एवं बसति में रहने, वाणिज्य करने व शीतल नीर से स्नान करने में भी मुनि के लिए कोई पाप नहीं होता। वि° के २०५ वर्ष पश्चात् कल्याणनगर में श्वेताम्बर मुनि श्रीकलश द्वारा यापनीय संघ की स्थापना हुई कही गई है। वि° की पांचवीं-छठी शताब्दी के ताम्रपटों आदि में भी यापनीय संघ के आचार्यो का उल्लेख मिलता है। काष्ठासंघ की उत्पत्ति वि° सं° के ७५३ वर्ष पश्चात् नंदीतट ग्राम में कुमारसेन मुनि द्वारा हुई। इस संघ में स्त्रियों को दीक्षा देने, तथा पीछी के स्थान में मुनियों द्वारा चौरी रखने का विधान पाया जाता है। माथुरसंघ की स्थापना, काष्ठासंघ की स्थापना से २०० वर्ष पश्चात् अर्थात् वि° सं° के ९५३ वर्ष व्यतीत होने पर मथुरा में रामसेन मुनि द्वारा पीछी रखना छोड़ दिया गया। काष्ठासंघ की उत्पत्ति से १८ वर्ष पश्चात् अर्थात् वि° सं° ९७१ में दक्षिणदेश के विन्ध्यपर्वत के पुष्कल नामक स्थान पर वीरचन्द्र मुनि द्वारा भिल्लक संघ की स्थापना हुई। उन्होंने अपना एक अलग गच्छ बनाया, प्रतिक्रमण तथा मुनिचर्या

की भिन्न व्यवस्था की, तथा वर्णाचार को कोई स्थान नहीं दिया। इस संघ का दर्शनसार के अतिरिक्त अन्यत्र कहीं उल्लेख नहीं मिलता। किन्तु इस एक उल्लेख पर से भी प्रमाणित होता है कि नौवीं दसवीं शताब्दी में एक जैन मुनि ने विन्ध्यपर्वत के भीलों में भी धर्म प्रचार किया और उनकी क्षमता के विचारानुसार धर्मपालन की कुछ विशेष व्यवस्थाएं बनाई।

श्रवणबेलगोला से प्राप्त हुए ५०० से भी अधिक शिलालेखों द्वारा हमें अनेक शताब्दियों की विविध आम्नायों तथा आचार्य-परम्पराओं का विवरण मिलता है। सिद्धबस्ति के एक शिलालेख में कहा गया है कि अर्हद्बलि ने अपने दो शिष्यों, पुष्पदंत और भूतबलि, द्वारा बड़ी प्रतिष्ठा प्राप्त की और उन्होंने मूल संघ को चार शाखाओं में विभाजित किया– सेन, नंदि, देव और सिंह। अनेक लेखों में जो संघों, गणों, गच्छों आदि के उल्लेख मिलते हैं उनमें से कुछ इसप्रकार हैं :– मूलसंघ, नंदिसंघ, नमिलूरसंघ, मयूरसंघ, किट्टरसंघ, कोल्लतूरसंघ, नंदिगण देशीगण, द्रमिल (तमिल) गण, काणुरगण, पुस्तक या सरस्वती गच्छ, वक्रगच्छ, तगरिलगच्छ, मंडितटगच्छ, इंगुलेश्वरबलि, पनसोगे बलि, आदि।

पूर्व व उत्तर भारत में धार्मिक प्रसार का इतिहास–

महावीर ने स्वयं विहार करके तो अपना उपदेश विशेष रूप से मगध, विदेह अंग, बंग, आदि पूर्व के देशों, तथा पश्चिम की ओर कोशल व काशी प्रदेश में ही फैलाया था, एवं तत्कालीन मगधराज श्रेणिक बिंबसार व उनके पुत्र कुणिक अजातशत्रु को अपना अनुयायी बनाया था। इसका भी प्रमाण मिलता है कि नंदराजा भी जैन धर्मानुयायी थे। ई॰ पू॰ १५० के लगभग के खारवेल के शिलालेख में स्पष्ट उल्लेख है कि जिस जैन प्रतिमा को नंदराज कलिंग से मगध में ले गए थे, उसे खारबेल पुनः अपने देश में वापस लाए। यह लेख अरहंतों और सिद्धों को नमस्कार से प्रारम्भ होता है, और फिर उसमें खारबेल के कुमारकाल के शिक्षण के पश्चात् राज्याभिषिक्त होकर उनके द्वारा नाना-प्रदेशों की विजय तथा स्वदेश में विविध लोकोपकारी कार्यो का विवरण पाया जाता है। कलिंग (उड़ीसा) में जैनधर्म बिहार से ही गया है, इसमें तो सन्देह ही नहीं; और बिहार का जैनधर्म से संबंध इतिहासातीत काल से रहा है। भौगोलिक परिस्थिति के अनुसार बिहार से उड़ीसा जाने का मार्ग मानभूम और सिंहभूम जिलों में से था। मानभूम के

ब्राह्मणों में एक वर्ग अब भी ऐसा विद्यमान है जो अपने को 'पच्छिम ब्राह्मण' कहते हैं, और व वर्धमान महावीर के वंशज रूप से वर्णन किए जाते हैं। वे यह भी कहते हैं कि वे उस प्राचीनतम आर्यवंश की शाखा के हैं जिसने अति प्राचीन काल में इस भूमि पर पैर रखा। आदितम श्रमण-परम्परा आर्यो की ही थी, किन्तु ये आर्य बैदिक आर्यो के पूर्व भारत की ओर बढ़ने से पहले ही मगध विदेह में रहते थे, इसमें अब कोई सन्देह रहा नहीं प्रतीत होता। इस दृष्टि से उक्त 'पच्छिम ब्राह्मणों' की बात बड़े ऐतिहासिक महत्व की जान पड़ती है। यो तो समस्त मगध प्रदेश में जैन पुरातत्व के प्रतीक बिखरे हुए हैं; जिनमें पटना जिले के राजगिर और पावा, तथा हजारीबाग जिले का पार्श्वनाथ पर्वत सुप्रसिद्ध ही हैं। किन्तु इन स्थानों में वर्तमान में जो अधिकांश मूर्तियां आदि पाई जाती हैं, उनकी अपेक्षा मानभूम और सिंहभूम जिलों के नाना स्थानों में बिखरे हुए जैन मन्दिर व मूर्तियाँ अधिक प्राचीन सिद्ध होते हैं। इनमें से अनेक आजकल हिन्दुओं द्वारा अपने धर्मायतन मान कर पूजे जाते हैं। कही जैन मूर्तियां भैरोनाथ के नाम से पुजती हैं और कहीं वे पांडवों कीं मूर्तियाँ मानी जा रही हैं। यत्र तत्र से एकत्र कर जो अनेक जैन मूर्तियाँ पटना के संग्रहालय में सुरक्षित हैं, वे ग्यारहवीं शताब्दि से पूर्व की प्रमाणित होती हैं। (देखिए राजचौधरी कृत जैनिजिम इन विहार)। चीनी यात्री हुएनत्सांग (सातवीं शताब्दी) ने अपने वैशाली के वर्णन में वहाँ निर्ग्रन्थों की बड़ी संख्या का उल्लेख किया है। उसने सामान्यतः यह भी कहा है कि जैन मुनि पश्चिम में तक्षशिला और गृद्धकूट तक फैले हुए थे, तथा पूर्व में निर्ग्रन्थ पुण्ड्रवर्धन और समतट तक भारी संख्या में पाए जाते थे। चीनी यात्री के इन उल्लेखों से सातवीं शती में समस्त उत्तर में जैन धर्म के सुप्रचार का अच्छा पता चलता है।

मथुरा के कंकाली टीले की खुदाई से एक अति प्राचीन स्तूप और एक दो जैन मंदिरों के ध्वंसावशेष मिले हैं। यहाँ पाई गई पुरातत्वसामग्री पर से ज्ञात होता है कि ई० पूर्व की कुछ शताब्दियों से लेकर, लगभग दसवीं शताब्दी तक वहाँ जैनधर्म का एक महान् केन्द्र रहा है। मुर्तियों के सिंहासनों, आयाग-पट्टों आदि पर जो लेख मिले हैं, उनमें से कुछ में कुषाण राजाओं, जैसे कनिष्क, हुविष्क, वासुदेव आदि नामों और उनके राज्यकाल के अंकों का स्पष्ट उल्लेख पाया गया है, जिससे वे ई० सन् के प्रारम्भिक काल के सिद्ध

होते हैं। प्राचीन जैन ग्रन्थों में इस स्तूप का उल्लेख मिलता है, और कहा गया है कि यह स्तूप सुपार्श्वनाथ की स्मृति में निर्माण कराया गया था, तथा पार्श्वनाथ के काल में इसका उद्धार कराया गया था। उसे देव निर्मित भी कहा गया है। आश्चर्य नहीं जो वह प्राचीन स्तूप महावीर से भी पूर्वकालीन रहा हो। हरिषेण कथाकोश के 'बैरकुमार कथानक' (श्लोक १३२) में मथुरा के पाँच स्तूपों का उल्लेख आया है। यहाँ से ही संभवतः जैन मुनियों के पंचस्तूपान्वय का प्रारंभ हुआ। इस अन्वय का एक उल्लेख गुप्त संवत् १५९ (सन् ४७८) का पहाड़पुर (बंगाल) के ताम्रपट से मिला है जिसके अनुसार उस समय वट गोहाली में एक जैन बिहार था, जिसमें अरहंतों की पूजा के लिए निर्ग्रन्थ आचार्य को एक दान किया गया। ये आचार्य बनारस की पंचस्तूप निकाय के आचार्य गुहनंदि के शिष्य कहे गए हैं। धवला टीका के रचयिता वीरसेन और जिनसेन (८-९वीं शती) भी इसी शाखा के थे। इसी अन्वय का उल्लेख जिनसेन के शिष्य गुणभद्र ने उत्तरपुराण में सेनान्वय के नाम से किया है। तब से इस अन्वय की सेनगण के नाम से ही प्रसिद्धि लगातार आज तक अविच्छिन्न रूप से उसकी अनेक शाखाओं व उपशाखाओं के रूप में पाई जाती है। मथुरा के स्तूपों की परम्परा मुगल सम्राट् अकबर के काल तक पाई जाती है, क्योंकि उस समय के जैन पंडित राजमल्ल ने अपने जम्बूस्वामी-चरित में लिखा है कि मथुरा में ५१५ जीर्ण स्तूप थे जिनका उद्धार टोडर सेठ ने अपरिमित व्यय से कराया था। ई० पू० प्रथम शताब्दी में जैन मुनिसंघ के उज्ञैनी में अस्तित्व का प्रमाण कालकाचार्य कथानक में मिलता है। इस कथानक के अनुसार उज्ञैन के राजा गर्दभिल्ल ने अपनी कामुक प्रवृत्ति से एक जैन आर्यिका साथ अत्याचार किया, जिसके प्रतिशोध के लिए कालकसूरि ने शाही राजाओं से संबंध स्थापित किया। इन्होंने गर्दभिल्ल को युद्ध में परास्त कर, उज्ञैन में शक राज्य स्थापित किया। इसी वंश का विनाश पीछे विक्रमादित्य ने किया। इसप्रकार यह घटना-चक्र विक्रम संवत् से कुछ पूर्व का सिद्ध होता है। उससे यह भी पता चलता है कि प्रसंगवश अतिशान्त-स्वभावी और सहनशील जैन-मुनियों का भी कभी-कभी राजशक्तियों से संघर्ष उपस्थित हो जाया करता था।

मथुरा से प्राप्त एक लेख में उल्लेख मिलता है कि गुप्त संवत् ११३ (ई० सन् ४३२) में श्री कुमारगुप्त के राज्यकाल में विधाधरी शाखा के

दंतिलाचार्य की आज्ञा से श्यामाढ्य ने एक प्रतिमा प्रतिष्ठापित कराई। कुमारगुप्त के काल (सन् ४२६) का एक और लेख उदयगिरि (विदिशा-मालवा) से मिला है, जिसमें वहाँ पार्श्वनाथ की प्रतिष्ठा के उल्लेख है। गुप्तकाल के सं० १४१ (ई० सन् ४६०) में स्कंदगुप्त राजा के उल्लेख सहित जो शिलालेख कहाय (संस्कृत ककुभः) से प्राप्त हुआ है उसमें उल्लेख है कि पांच अरहंतों की स्थापना मन्द्र नाम के धर्म पुरूष ने कराई थी और शैल-स्तम्भ खड़ा किया था।

दक्षिण भारत व लंका में जैन धर्म तथा राजवंशों से संबंध–

एक जैन परम्परानुसार मौर्यकाल में जैनमुनि भद्रबाहु ने चन्द्रगुप्त (सम्राट् को प्रभावित किया था और वे राज्य त्याग कर, उन मुनिराज के साथ दक्षिण को गए थे। मैसूर प्रान्त के अन्तर्गत श्रवणबेलगोला में अब भी उन्हीं के नाम से एक पहाड़ी चन्द्रगिरि कहलाती है, और उस पर वह गुफा भी बतलाई जाती है, जिसमें भद्रबाहु ने तपस्या की थी, तथा राजा चन्द्रगुप्त उनके साथ अन्त तक रहे थे। इसप्रकार मौर्य सम्राट् चन्द्रगुप्त के काल में जैनधर्म का दक्षिणभारत में प्रवेश हुआ माना जाता है। किन्तु बौद्धों के पालि साहित्यान्तर्गत महावंश में जो लंका के राजवंशों का विवरण पाया जाता है, उसके अनुसार बुद्धनिर्वाण से १०६ वर्ष पश्चात् पांडुकाभय राजा का अभिषेक हुआ और उन्होंने अपने राज्य के प्रारंभ में ही अनुराधपुर की स्थापना की, जिसमें उन्होंने निर्ग्रन्थ श्रमणों के लिए अनेक निंवासस्थान बनवाए। इस उल्लेख पर से स्पष्टतः प्रमाणित होता है कि बुद्ध निर्वाण सं० के १०६ वें वर्ष में भी लंका मे निर्ग्रन्थों का अस्तित्व था। लंका में बौद्ध धर्म का प्रवेश अशोक के पुत्र महेन्द्र द्वारा बुद्धनिर्वाण से २३६ वर्ष पश्चात् हुआ कहा गया है। इस पर से लंका में जैन धर्म का प्रचार, बौद्ध धर्म से कम से कम १३० वर्ष पूर्व हो चुका था, ऐसा सिद्ध होता है। संभवतः सिंहल में जैनधर्म दक्षिणभारत में से ही होता हुआ पहुँचा होगा। जिस समय उत्तरभारत में १२ वर्षीय दुर्भिक्ष के कारण भद्रबाहु ने सम्राट् चन्द्रगुप्त तथा विशाल मुनि संघ के साथ दक्षिणपथ की ओर बिहार किया, तब वहाँ की जनता में जैनधर्म का प्रचार रहा होगा और इसी कारण भद्रबाहु को अपने संघ का निर्वाह होने का विश्वास हुआ होगा, ऐसा भी विद्धानों का अनुमान है। चन्द्रगुप्त के प्रपौत्र सम्प्रति, एक जैन परम्परानुसार, आचार्य सुहस्ति के

शिष्य थे, और उन्होंने जैनधर्म का स्तूप, मंदिर आदि निर्माण कराकर, देशभर में उसी प्रकार प्रचार किया जिसप्रकार कि अशोक ने बौद्धधर्म का किया था। रामनद और टिन्नावली की गुफाओं में ब्राह्मीलिपि के शिलालेख यद्यपि अस्पष्ट हैं, तथापि उनसे एवं प्राचीनतम तामिल ग्रंथों से उस प्रदेश में अति प्राचीनकाल में जैनधर्म का प्रचार सिद्ध होता है। तामिल काप्य कुरल व ठोलकप्पियम पर जैनधर्म का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

मणिमेकलइ यद्यपि एक बौद्ध काव्य है, तथापि उसमें जैन मुनियों और उनके उपदेशों के अनेक उल्लेख आए हैं। जीवक चिन्तामणि; सिंखप्पडिकार, नीलकेशी, यशोधर काव्य आदि तो स्पष्टतः जैन कृतियाँ ही हैं। सुप्रसिद्ध जैनाचार्य समन्तभद्र के कांची से संबंध का उल्लेख मिलता है। कुन्दकुन्दाचार्य का संबंध, उनके एक टीकाकार शिवकुमार महाराज से बतलाते हैं। प्राकृत लोक-विभाग के कर्ता सर्वनन्दि (सन् ४५८) कांची नरेश सिंहवर्मा के समकालीन कहे गए हैं। दर्शनसार के अनुसार द्राविड़ संघ की स्थापना पूज्यपाद के शिष्य वज्रनन्दि द्वारा मदुरा में सन् ४७० में की गई थी। इस प्रकार के अनेक उल्लेखों और नाना घटनाओं से सुप्रमाणित होता है कि ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों में तामिल प्रदेश में जैन धर्म का अच्छा प्रचार हो चुका था।

कदम्ब राजवंश—

कदम्बवंशी अविनीत महाराज के दानपत्र में उल्लेख है कि उन्होंने देसीगण, कुन्दकुन्दान्वय के चन्द्रनंदि भट्टारक को जैन मंदिर के लिए एक गांव का दान दिया। यह दानपत्र शक सं° ३८८ (ई° सं° ४६६) का है और मर्करा नामक स्थान से मिला है। इसी वंश के युवराज काकुत्स्थ, द्वारा भगवान अर्हन्त के निमित्त श्रुतकीर्ति सेनापति को भूमि का दान दिए जाने का उल्लेख है। इसी राजवंश के एक दो अन्य दानपत्र बड़े महत्वपूर्ण हैं। इनमें से एक में श्रीविजय शिवमृगेश वर्मा द्वारा अपने राज्य के चतुर्थ वर्ष में एक ग्राम का दान उसे तीन भागों में बांटकर दिए जाने का उल्लेख है। एक भाग 'भगवत अर्हद् महाजिनेन्द्र देवता' को दिया गया, दूसरा 'श्वेतपट महाश्रमण संघ' के उपभोग के लिए, और तीसरा 'निर्ग्रन्थ महाश्रमण संघ' उपयोग के लिए। दूसरे लेख में शान्ति वर्मा के पुत्र श्री मृगेश द्वारा अपने राज्य के आठवें वर्ष में यापनीय, निर्ग्रन्थ और कूर्चक मुनियों के हेतु भूमि-

दान दिए जाने का उल्लेख है। एक अन्य लेख में शान्तिवर्मा द्वारा यापनीय तपस्वियों के लिए एक ग्राम के दान का उल्लेख है। एक अन्य लेख में हरिवर्मा द्वारा सिंह सेनापति के पुत्र मृगेश द्वारा निर्मापित जैन मंदिर की अष्टान्हिका पूजा के लिए, तथा सर्वसंघ के भोजन के लिए एक गांव कूर्चकों के वारिषेणाचार्य संघ के हाथ में दिए जाने का उल्लेख है। इस वंश के और भी अनेक लेख हैं जिनमें जिनालयों के रक्षणार्थ व नाना जैन संघों के निमित्त ग्रामों और भूमियों के दान का उल्लेख है। उससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि पांचवीं छठी शताब्दी में जैन संघ के निर्ग्रन्थ (दिगम्बर), श्वेतपट, यापनीय वा कूर्चक शाखाएं सुप्रतिष्ठित सुविख्यात, लोकप्रिय और राज्य-सम्मान्य हो चुकी थी। इनमें के प्रथम तीन मुनि-सम्प्रदायों का उल्लेख तो पट्टावलियों व जैन साहित्य में बहुत आया हैं, किन्तु कूर्चक सम्प्रदाय का कहीं अन्यत्र विशेष परिचय नहीं मिलता।

गंग राजवंश—

श्रवणबेलगोला के अनेक शिलालेखों तथा अभयचन्द्रकृत गोम्मटसार वृत्ति की उत्थानिका में उल्लेख मिलता है कि गंगराज की नींव डालने में जैनाचार्य सिंहनंदि ने बड़ी सहायता की थी। इस वंश के अविनीत नाम के राजा के प्रतिपालक जैनाचार्य विजयकीर्ति कहे गए हैं। सुप्रसिद्ध तत्वार्थसूत्र की सर्वार्थसिद्धि टीका के कर्त्ता आचार्य पूज्यपाद देवनंदि इसी वंश के सातवें नरेश दुर्विनीत के राजगुरू थे, ऐसे उल्लेख मिलते हैं। इनके तथा शिवमार और श्रीपुरूष नामक नरेशों के अनेक लेखों में जैन मन्दिर निर्माण व जैन मुनियों को दान के उल्लेख भी मिलते हैं। गंगनरेश मारसिंह के विषय में कहा गया है कि उन्होंने अनेक भारी युद्धों में विजय प्राप्त करके नाना दुर्ग और किले जीतकर एवं अनेक जैन मन्दिर और स्तम्भ निर्माण करा कर अन्त में अजितसेन भट्टारक के समीप वंकापुर में संल्लेखना विधि से मरण किया, जिसका काल शक सं० ८९९ (ई० सं० ९७४) निर्दिष्ट है। मारसिंह के उत्तराधिकारी राजमल्ल (चतुर्थ) थे, जिनके मंत्री चामुण्डराज ने श्रवणबेलगोल के विन्ध्यगिरि पर चामुण्डराय बस्ति निर्माण कराई और गोमटेश्वर की उस विशाल मूर्त्ति का उद्घाटन कराया जो प्राचीन भारतीय मूर्त्तिकला का एक गौरवशाली प्रतीक है। चामुण्डराय का बनाया हुआ एक पुराण ग्रन्थ भी मिलता है जो कन्नड़ भाषा में है। इसे उन्होंने शक सं० ९००

में समाप्त किया था। उसमें भी उन्होंने अपने ब्रह्मक्षेत्र कुल तथा अजितसेन गुरू का परिचय दिया है। अनेक शिलालेखों में विविध गंगवंशी राजाओं, सामन्तों, मंत्रियों व सेनापतियों आदि के नामों, उनके द्वारा दिए गए दानों आदि धर्मकार्यो, तथा उनके सल्लेखना पूर्वक मरण के उल्लेख पाए जाते हैं। कन्नड़ कवि पोन्न द्वारा सन् ९३३ में लिखे गए शान्तिपुराणकी सन् ९७३ के लगभग एक धर्मिष्ट महिला आतिमब्बे ने एक सहस्त्र प्रतियाँ लिखाकर दान में बटवा दीं।

राष्ट्रकूट राजवंश—

सातवीं शताब्दी से दक्षिणभारत में जिस राजवंश का बल व राज्य-विस्तार बढ़ा, उस राष्ट्रकूट वंश से तो जैन धर्म का बड़ा घनिष्ठ संबंध पाया जाता है। राष्ट्रकूट नरेश अमोघवर्ष प्रथम ने स्वयं प्रश्नोत्तर-रत्नमालिका की रचना की थी, जिसका तिब्बती भाषा में उसकी रचना के कुछ ही पश्चात् अनुवाद हो गया था और जिस पर से यह भी सिद्ध होता है कि राजा अमोघवर्ष राज्य छोड़कर स्वयं दीक्षित हो गए थे। उनके विषय में यह भी कहा जाता है कि वे आदिपुराण के कर्त्ता जिनसेन के चरणों की पूजा करते थे। शाकटायन व्याकरण पर की अमोघवृत्ति नामक टीका उनके नाम से संबंध पाई जाती है, और उन्हीं के समय में महावीराचार्य ने अपने गणितसार नामक ग्रंथ की रचना की थी। वे कन्नड अलंकारशास्त्र 'कविराजमार्ग' के कर्त्ता भी माने जाते हैं। उनके उत्तराधिकारी कृष्ण-द्वितीय के काल में गुणभद्राचार्य ने उत्तरपुराण को पूरा किया, इन्द्रनन्दि ने ज्वाला-मालिनी-कल्प की रचना की; सोमदेव ने यशस्तिलक चम्पू नामक काव्य रचा तथा पुष्पदंत ने अपनी विशाल, श्रेष्ठ अपभ्रंश रचनाएँ प्रस्तुत की। उन्होंने ही कन्नड के सुप्रसिद्ध जैन कवि पोन्न को उमय-भाषा चक्रवर्ती की उपाधि से विभूषित किया। उनके पश्चात् राष्ट्रकूट नरेश इन्द्रराज-चतुर्थ ने शिलालेखानुसार अपने पूर्वज अमोघवर्ष के समान राज्यपाट त्याग कर जैन मुनि दीक्षा धारण की थी, और श्रवणबेलगोला के चन्द्रगिरि पर्वत पर समाधिपूर्वक मरण किया था। श्रवणबेलगोला के अनेक शिलालेखों में राष्ट्रकूट नरेशों की जैन धर्म के प्रति आस्था, सम्मान-वृद्धि और दानशीलता के उल्लेख पाए जाते हैं। राष्ट्रकूटों के संरक्षण में उनकी राजधानी मान्यखेट एक अच्छा जैन केन्द्र बन गया था, और यही कारण है कि संवत् १०२९ के लगभग जब धारा के परमारवंशी राजा हर्षदेव के द्वारा मान्यखेट नगरी लूटी और

जलाई गई, तब महाकवि पुष्पदंत के मुख से हठात् निकल पड़ा कि 'जो मान्यखेट नगर दीनों और अनाथों का धन था, सदैव बहुजन पूर्ण और पुष्पित उद्यानवनों से सुशोभित होते हुए ऐसा सुन्दर था कि वह इन्द्रपुरी की शोभा को भी फीका कर देता था, वह जब धारानाथ की कोपाग्नि में दग्ध हो गया तब, अब पुष्पदंत कवि कहाँ निवास करें'। (अप. महापुराण-संधि ५०)।

चालुक्य ओर होयसल राजवंश—

चालुक्यनरेश पुलकेशी (द्वि°) के समय में जैन कवि रविकीर्ति ने ऐहोल में मेघुति मन्दिर बनवाया और वह शिलालेख लिखा जो अपनी ऐतिहासिकता तथा संस्कृत काव्यकला की दृष्टि से बड़ा महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ है। उसमें कहा गया है कि रविकीर्ति की काव्यकीर्ति कालिदास और भारवि के समान थी। लेख में शक सं° ५५९ (ई° सन् ६३४) का उल्लेख है और इसी आधार पर संस्कृत के उक्त दोनों महाकवियों के काल की यही उत्तरावधि मानी जाती है। लक्ष्मेश्वर से प्राप्त अनेक दानपत्रों में चालुक्य नरेश विनयादित्य, विजयादित्य और विक्रमादित्य द्वारा जैन आचार्यों को दान दिए जाने के उल्लेख मिलते हैं। बादामी और ऐहोल की जैन गुफायें और उनमें तीर्थंकरों की प्रतिमायें भी इसी काल की सिद्ध होती हैं।

ग्यारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ से दक्षिण में पुनः चालुक्य राजवंश का बल बढ़ा। यह राजवंश जैन धर्म का बड़ा संरक्षक रहा, तथा उसके साहाय्य से दक्षिण में जैन धर्म का बहुत प्रचार हुआ और उसकी ख्याति बढ़ी। पश्चिमी चालुक्य वंश के संस्थापक तैलप ने जैन कन्नड़ कवि रत्न को आश्रय दिया। तैलप के उत्तराधिकारी सत्याश्रय ने जैन मुनि विमलचन्द्र पंडित देव को अपना गुरू बनाया। इस वंश के अन्य राजाओं, जैसे जयसिंह द्वितीय, सोमेश्वर प्रथम और द्वितीय, तथा विक्रमादित्य षष्ठम ने कितने ही जैन कवियों को प्रोत्साहित कर साहित्य-सृजन कराया, तथा जैन मन्दिरों व अन्य जैन संस्थाओं को भूमि आदि का दान देकर उन्हें सबल बनाया। होयसल राजवंश की तो स्थापना ही एक जैनमुनि के निमित्त से हुई कही जाती है। विनयादित्य नरेश के राज्यकाल में जैनमुनि वर्द्धमानदेव का शासन के प्रबन्ध में भी हाथ रहा कहा जाता है। इस वंश के दो अन्य राजाओं के गुरू भी जैनमुनि रहे। इस वंश के प्रायः सभी राजाओं ने जैन मन्दिरों और आश्रमों को दान दिए थे। इस वंश के सबसे अधिक प्रतापी नरेश विष्णुवर्द्धन

के विषय में कहा जाता है कि उसने रामानुजाचार्य के प्रभाव में पड़कर वैष्णबधर्म स्वीकार कर लिया था। किन्तु इन बात के प्रचुर प्रमाण मिलते हैं कि वह अपने राज्य के अन्त तक जैन धर्म के प्रति उपकारी और दानशील बना रहा। ई° सन् ११२५ में भी उसने जैनमुनि श्रीपाल त्रैविद्यदेव की आराधना की, शल्य नामक स्थान पर जैन बिहार बनवाया तथा जैन मन्दिरों व मुनियों के आहार के लिए दान दिया। एक अन्य ई° सन् ११२९ के लेखानुसार उसने मल्लिजिनालय के लिए एक दान किया। ई° सन् ११३३ में उसने अपनी राजधानी द्वारासमुद्र में ही पार्श्वनाथ जिनालय के लिए एक ग्राम का दान किया, तथा अपनी तत्कालीन विजय की स्मृति में वहाँ के मूलनायक को विजय-पार्श्वनाथ के नाम से प्रसिद्ध किया और अपने पुत्र का नाम विजयसिंह रक्खा, और इस प्रकार उसने अपने परम्परागत धर्म तथा नये धारण किए हुए धर्म के बीच संतुलन बनाए रखा। उसकी रानी शांतलदेवी आजन्म जैनधर्म की उपासिका रही और जैन मन्दिरों को अनेक दान देती रही। उसके गुरू प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव थे, और उसने सन् ११२१ में जैन समाधि-मरण की संल्लेखना विधि से देह त्याग किया। विष्णुवर्द्धन के अनेक प्रभावशाली मंत्री और सेनापति भी जैन धर्मानुयायी थे। उसके गंगराज सेनापति ने अनेक जैन मन्दिर बनवाए, अनेकों का जीर्णोद्वार किया तथा अनेकों जैन संस्थाओं को विपुल दान दिए। उसकी पत्नी लक्ष्मीमति ने भी जैन सल्लेखना विधि से मरण किया, जिसकी स्मृति में उसके पति ने श्रवणबेलगोला के पर्वत पर एक लेख खुदवाया। उसके अन्य अनेक सेनापति, जैसे बोप्प, पुनिस मरियाने व भरतेश्वर, जैन मुनियों के उपासक थे और जैन धर्म के प्रति बड़े दानशील थे, इसके प्रमाण श्रवणबेलगोला व अन्य स्थानो के बहुत से शिलालेखों में मिलते हैं। विष्णुवर्द्धन के उत्तराधिकारी नरसिंह प्रथम ने श्रवणबेलगोला की वंदना की तथा अपने महान् सेनापति हुल्ल द्वारा बनवाये हुए चतुर्विंशति जिनालय को एक ग्राम का दान दिया। होयसल नरेश वीर-बल्लाल द्वितीय व नरसिंह तृतीय के गुरू जैन मुनि थे। इन नरेशों ने तथा इस वंश के अन्य अनेक राजाओं ने जैन मन्दिर बनवाये और उन्हें बड़े-बड़े दानों से पुष्ट किया। इस प्रकार यह पूर्णतः सिद्ध है कि होयसल वंश के प्रायः सभी नरेश जैन धर्मानुयायी थे और उनके साहाय्य एवं संरक्षण द्वारा जैन मन्दिर तथा अन्य धार्मिक संस्थाएँ दक्षिण प्रदेश में खूब फैली और समृद्ध हुई।

क्रमशः

श्रावक जीवन

आचार्य श्री विजयभद्र गुप्त सूरीश्वरजी

स्मृति को बनाए रखो :

कभी कभी उम्र बढ़ने के साथ मनुष्य की स्मृति-याददाश्त कम हो जाती है। उस को एक घंटे पहले की बात याद नहीं रहती है। 'मैंने आज सामायिक किया या नहीं ? मुझे कब सामायिक करना है ?' भूल जाता है। इस से सामायिक व्रत का भंग नहीं होता है, दोष लगता है। स्मृतिभंग होने में जीव का इतना दोष नहीं है। जब कि अनादर करने में जीव का ही दोष होता है।

सामायिक का अनादर नहीं करना है :

अनादर होता है प्रबल प्रमाद से। परंतु यह सब से बड़ा दोष है जैसे तैसे सामायिक करना न विधि का आदर, न हृदय में सामायिक के प्रति *बहुमान*। अनादर से कभी तो वह सामायिक करता ही नहीं है, करता है तो समय का खयाल नहीं रखता है। लिया सामायिक और तुरन्त पार *लिया!*

प्रश्न : ऐसा करने से तो सामायिक का भंग ही हो जाता है न ? इस को अतिचार क्यों कहा गया ?

महाराजश्री : इसलिए कि वह व्रत के प्रति सापेक्ष भाववाला है। जैसा-तैसा भी करता है न ! 'मुझे व्रत है, इसलिए मुझे सामायिक करना चाहिए।' ऐसा विचार रहने से व्रत का भंग नहीं होता है। फिर भी, अनादर करना बड़ा दोष है।

धर्मक्रिया के प्रति अनादर करने से पापकर्म का ऐसा बंधन होता है कि आनेवाले जन्मों में वह धर्मक्रिया करने को मिले ही नहीं। यानी पुण्यबंध करने की और कर्मों को निर्जरा करने की धर्मक्रियायें जनम-जनम नहीं मिलती है।

सामायिक से कर्मनिर्जरा :

सामायिक को यदि भावपूर्वक की जाय तो उस से अनंत कर्मों की

निर्जरा होती है। यानी पापकर्मों का नाश होता है। परमात्मपूजा, गुरूसेवा, सुपात्रदान, अनुकंपादान...वगैरह धर्मक्रियाओं से पुण्यकर्म का बंध विशेष रूप से होता है। सामायिक से विशेष रूप से कर्मनिर्जरा होती है, इसलिए प्रतिदिन एक सामायिक तो करना ही चाहिए !

खास कर के जब आप के गांव-नगर में साधुपुरूषों का समागम नहीं हो उस समय तो अवश्य सामायिक करना चाहिए। समूह में भी सामायिक कर सकते हैं। ४८ मिनट तो दुनिया का प्रपंच छोड़ना ही चाहिए और अपनी आत्मा के लिए कुछ करना चाहिए।

४८ मिनट की फुरसत निकालनी ही चाहिए। चाहे आप बड़े उद्योगपति हो या नौकरी करने वाले सर्वन्ट हों। आप सामायिक करना शुरू करें... ६ महीने तक निरंतर करते रहें...बाद में आप अपना अनुभव मुझे बताना। फिर आप सामायिक किए बिना रह नहीं सकेंगे। आप को सामायिक की लगन लग जाएगी। आप अपूर्व शान्ति का अनुभव करेंगे।

आप को सामायिक व्रत से शान्ति-समता और प्रसन्नता प्राप्त हो और आप समतायोगी बन कर सर्वज्ञ-वीतराग बनें यही मंगल कामना।

देशावकासिक व्रत क्यों और कैसे :

दूसरा शिक्षाव्रत है देशावकासिक। देश यानी अल्प और अवकाश यानी निवृत्ति। दिन में अल्प समय की निवृत्ति लेने का यह व्रत है। संपूर्ण दिन निवृत नहीं रहना है। सुबह और शाम प्रतिक्रमण और आठ सामायिक करने का अवकाश चाहिए। इतनी ही निवृत्ति चाहिए।

यह अवकाश निकालने का प्रयोजन है अणुव्रत, गुणव्रत, और शिक्षाव्रत जो लिए हों, उन व्रतों का पर्यालोचन करना और लिए हुए व्रतों को विशेष रूप से ग्रहण करने के लिए सोचना। व्रतपालन की स्वयं की शक्ति और मर्यादा देखते हुए प्रतिवर्ष व्रतों में हेरफेर-परिवर्तन किया जा सकता है। यदि व्रत एक वर्ष की मर्यादा से ग्रहण किए हों तो। यदि यावज्जीव के लिए व्रत लिए हों तो विशेष रूप से परिवर्तन हो सकता है, परंतु कम नहीं किए जा सकते और ज्यादा अपवाद भी नहीं ले सकते। यानी व्रतों का संक्षेपीकरण किया जा सकता है।

कुछ प्राचीन आचार्यों का मत ऐसा है कि यह देशावकासिक व्रत मात्र दिशापरिमाण व्रत (छट्ठे) का संक्षेप करने के लिए है ! उनका तर्क यह है

कि इस देशावकाशिक व्रत के अतिचार, दिशापरिमाण व्रत के अतिचार जैसे ही हैं ।

ठीक है, दिशापरिमाण व्रत का पर्यालोचन कर उसका संक्षेप यदि करना है तो कर लेना, बाद में दूसरे व्रतों का पर्यालोचन और संक्षेप करना । समय आठ सामायिक का है । बहुत अच्छे ढंग से व्रतों का पर्यालोचन हो सकता है । अपने संयोग और सामर्थ्य का भी चिन्तन हो सकता है !

व्रतों का पर्यालोचन कैसे करेंगे ?

जैसे कि आपने 'दिशापरिमाण व्रत' ग्रहण किया हुआ है । हर दिशा में आपने २००/२०० किलोमीटर जाने की मर्यादा रखी है । अब आप 'देशावकासिक' व्रत लेकर बैठे हैं, आप सोचें कि बीते हुए वर्ष में आप कोई भी दिशा में भूल से, प्रमाद से या जानबूझकर २०० किलोमीटर से ज्यादा दूर नहीं गए हैं न ? यदि गए हैं, तो आप सोचें कि 'जब सद्गुरू का संयोग मिलेगा तब उन से इस भूल का प्रायश्चित्त ले लूंगा और आगे ऐसी भूल नहीं करूंगा ।

यदि सोचने पर मालूम हो कि कोई भी दिशा में मैं १०० किलोमीटर से ज्यादा दूर नहीं गया हूं । और भविष्य में १०० किलोमीटर से ज्यादा दूर जाने की आवश्यकता भी रहनेवाली नहीं है, तो फिर मैं १०० किलोमीटर की ही मर्यादा क्यों न कर लूं ? आज दिन तक २०० किलोमीटर की मर्यादा है, अब मैं १०० किलोमीटर की मर्यादा बांध सकता हूं ।

परंतु मुझे, संभव है कि पूर्व दिशा में कभी २०० किलोमीटर जाना पड़ सकता है, तो मैं पूर्व दिशा में २०० किलोमीटर की मर्यादा रख लूं और शेष सभी दिशाओं में १००/१०० किलोमीटर की मर्यादा कर दूं !

परंतु मुझे उर्ध्व (ऊपर) और अधो (नीचे) दिशा में एक/एक K.M. से ज्यादा जाना पड़ता ही नहीं है ! ऊपर हवाई जहाज में मुसाफरी करने में कभी दो K.M. जाना पड़ता है, परंतु नीचे तो ५० पगथिए से ज्यादा नहीं उतरना पड़ता है, इसलिए क्यों आधा K.M. की मर्यादा नहीं कर लूं ? कर लेनी चाहिए ।

हाँ, कभी...ऐसी बिमारी आ जाय कि अमरीका जाकर अथवा U.K. जाकर ऑपरेशन करना पड़ जाय... तो मैं, अपवाद रख सकता हूं कि बिमारी के कारण कोई भी दिशा में कितना भी दूर जा सकूंगा ।'

इस प्रकार आप हर व्रत के विषय में आलोचन कर सकते हैं । ग्रहण किए हुए व्रतों का पुनर्विचार करने का ही यह व्रत है ।

इस व्रत में भी, दूसरे व्रतों की तरह अतिचार लगने की संभावना बताते हुए ग्रंथकार आचार्यश्री ने कहा है :

'आनयन-प्रेष्यप्रयोग-शब्द-रूपानुपात-पुद्गलप्रक्षेपाः'

पांच अतिचार :

इस प्रकार पांच अतिचार बताए हैं ।

१. पहला अतिचार है बाहर से वस्तु मंगवाने की चालाकी करना,

२. दूसरा अतिचार है वस्तु मर्यादा से बाहर के क्षेत्र में भेजना,

३. तीसरा अतिचार है बाहर खड़े मनुष्य को बुलाने के लिए छींक खाना, खंखार करना वगैरह,

४. चौथा अतिचार है बाहर खड़े मनुष्य को अपना रूप बताने की चेष्टा करना ।

५. पांचवा अतिचार है कंकड़ वगैरह फेंककर 'मैं यहां आया हूं,' ऐसा बताने की चेष्टा करना ।

प्रश्न : स्वेच्छा से व्रत लेने पर ऐसे अतिचार...ऐसी भूलें मनुष्य क्यों करता है ? हाँ, किसी के आग्रह से, अनिच्छा से व्रत लेता है...तो ऐसी भूलें करना संभवित है ।

महाराजश्री : व्रत ग्रहण करते समय मनुष्य के भाव विशुद्ध और प्रवर्धमान होते हैं । उस समय वह सोचता है कि 'मैं जिस प्रकार व्रत ग्रहण करता हूं उसी प्रकार पालन करूंगा ।' परंतु जीवात्मा के भाव एक समान नहीं रहते हैं । कभी भाव बढ़ते रहते हैं, कभी गिरते रहते हैं...तो कभी कुछ समय के लिए भाव वैसे के वैसे अवस्थित रहते हैं । यह मन का स्वभाव है। व्रत लेते समय भाव बढ़ते हुए होते हैं, व्रत लेने के पश्चात् भाव गिर भी सकते हैं...जब गिरते हैं तब ये दोष, ये अतिचार लगते हैं ! गिरता हुआ मन, अशुभ विचारों को प्रवाहित करता है । व्रत ग्रहण करने के बाद जब भाव गिरते हैं तब व्रत बंधनरूप लगते हैं । फिर भी, यदि गृहस्थ पापभीरू होता है तो व्रत का भंग करने का नहीं सोचेगा । भंग नहीं हो, उस बात की सावधानी रखता हुआ, व्रतों को सिर्फ दोष लगे, वैसा काम करेगा । 'मेरा व्रत टूटा तो नहीं है ! टूटना नहीं चाहिए...' ऐसा सोचता है, यह भी

उसकी 'व्रतसापेक्षता' है। ज्ञानी पुरूषों ने 'व्रतसापेक्षता' का मूल्यांकन बहुत किया है।

व्रत सापेक्षता चाहिए ही :

व्रत सापेक्षता यानी व्रत का पक्षपात। व्रतधारी मनुष्य को व्रत का पक्षपात होना ही चाहिए। कभी पापकर्मों का प्रबल आवेग आने पर वह पाप करने का सोच लेता है और पाप कर भी लेता है, परंतु व्रत का पक्षपात होगा उसके हृदय में, तो वह पुनः व्रत में स्थिर होगा और व्रतभंग करने का या व्रत को दूषित करने का पश्चात्ताप करेगा, प्रायश्चित्त भी करेगा। व्रत छोड़ने पर भी व्रत का पक्षपात बना रहता है तो मनुष्य व्रत और व्रतधारियों का प्रशंसक बना रहेगा। व्रत और व्रतधारी की प्रशंसा, व्रतपक्षपात की निशानी है। इसलिए कभी व्रतभ्रष्ट व्यक्ति, व्रत और व्रतधारी की प्रशंसा करता हो, तो आप उसे दंभ नहीं मानें, उसका उपहास नहीं करें। उसका मूल्यांकन करना होगा। 'यह महानुभाव व्रतभष्ट हुआ है परंतु उसके हृदय में व्रत का पक्षपात है, इसलिए कभी न कभी यह व्यक्ति पुनः व्रतधारी बन सकता है।' ऐसा सोचने से व्रत सापेक्षता के भाव का मूल्यांकन होता है।

इस बात को पुष्ट करनेवाले उदाहरण हैं नंदिषेण मुनि, आषाढाभूति मुनि, अरणिक मुनि वगैरह के। अलबत्ता, मोहनीय कर्म के प्रबल उदय से वे व्रतभ्रष्ट हुए थे जरूर, परंतु उनके हृदय में व्रतों का पक्षपात भी अवश्य था। इसलिए जब उनको निमित्त मिला उत्थान का, वे जग गए और पुनः व्रतधारी बन गए।

कभी कभी ऐसे व्रतधारी श्रावक-श्राविका हमारे पास आते हैं। व्रतों में जो दोष लगे होते हैं, वह कहते हैं और प्रायश्चित्त लेते हैं। व्रतभंग हो गया हो तो भी कहते हैं, प्रायश्चित्त लेकर वे अपनी आत्मा को निर्मल बनाते हैं। व्रतों के प्रति प्रेम होता है, इसलिए व्रतभंग होने पर हृदय में दुःख होता है और प्रायश्चित्त लेने की भावना होती है।

प्रश्न : तो फिर व्रतभंग कैसे होता है ?

महाराजश्री : सत्त्व कम पड़ जाने से ! बेटरी में पावर होते हुए भी प्रकाश नहीं होता है, ऐसा होता है न ? पावर हैं परंतु पावरलेस ! वैसे व्रत हैं परंतु सत्त्व कम पड़ जाने पर या सत्त्व नष्ट हो जाने पर व्रतभंग हो जाता

है । सेल नए डाल दो बेटरी में...फिर प्रकाश ही प्रकाश ! वैसे सत्त्व जाग्रत होने पर पुनः व्रतपालन शुरू हो जाता है ।

व्रतपालन के लिए सत्त्व जाहिए :

सत्त्व आधार होता है व्रतपालन में । इसलिए सत्त्व को बनाए रखना चाहिए । सत्त्व को बनाए रखने के लिए सत्त्वशील पुरूषों का संपर्क...परिचय रखना चाहिए । सत्त्वशील व्रतधारी स्त्री-पुरूषों के परिचय से, आपकी बेंटरी 'चार्ज' होती रहेगी । पावर डल नहीं पड़ जायेंगे । व्रतपालन में दृढ़ता बनी रहेगी ! व्रतभंग के कैसे भी निमित्त उपस्थित हो जाय, आप अपने व्रत में दृढ़ बने रहोगे । व्रत को दूषित करनेवाले और व्रत का भंग करनेवाले निमित्त इस दुनिया में सर्वत्र होते हैं । सत्त्वशील व्रतधारी मनुष्य उन निमित्तों के सामने अडिग रहेगा ।

'प्राण जाते हों तो चले जाएं, मैं व्रतभंग नहीं करूंगा !' यह निर्णय सत्त्वशील पुरूप का होता है । 'जो नुकसान होता हो, हो जाय, मैं व्रतभंग कर मेरी आत्मा को नुकसान नहीं पहुंचाऊंगा ।' यह बात होती है सात्त्विक मनुष्यों की । आचार्यदेवश्री हरिभद्रसूरिजी ने 'योगदृष्टि समुच्चय' नाम के ग्रंथ में कहा है :

'प्राणान् त्यजति धर्मार्थं, न धर्म प्राणसंकटे ।'

'अपने व्रतधर्म की रक्षा के लिए प्राणों का त्याग करेगा, परंतु प्राणों को बचाने के लिए व्रतधर्म का त्याग नहीं करेगा !' यह बात कही गई है सत्त्वशील पुरूषों के लिए, सत्त्वशील सन्नारियों के लिए ।

सत्त्व गिरता है, भाव गिरते हैं, व्रत दूषित होते हैं :

जो निःसत्त्व जीव होते हैं, वे कभी भावावेश में बहकर, अपनी शक्ति-सामर्थ्य का विचार किए बिना व्रत ले लेते हैं...निःसत्त्व तो होते ही हैं...कोई वैसा निमित्त मिला...व्रत को अतिचार लगते हैं या व्रतभंग कर देते हैं ! जैसे कि–

एक भाई ने कहा : मैं रात्रिभोजन नहीं करने की प्रतिज्ञा ली थी, परंतु तीन-चार बार रात्रिभोजन कर लिया । चूंकि रात में जोरों की भूख लगी थी...घर पहुंचा तब रात हो गई थी...खाए बिना चले वैसा नहीं था...वगैरह ।

दूसरे एक भाई ने कहा : मैंने जमीनकंद नहीं खाने की प्रतिज्ञा ली

थी। लंबी ट्रैवेलिंग थी, रास्ते में दूसरी कोई सब्जी नहीं मिलती थी इसलिए मैंने तीन-चार आलू...प्याज खा लिए थे...। एक-दो बार शादी के भोजन में गया था, मित्रों के अति आग्रह से जमीनकंद खा लिया था।

एक भाई ने कहा : मैं चोरी (पैसे की) नहीं करने की प्रतिज्ञा ली थी, परंतु एक बार पैसे की अत्यंत आवश्यकता होने पर, सेठ को बिना पूछे तिजोरी में से १० हजार रूपये ले लिए थे !

ये सब निःसत्त्व व्रतधारी मनुष्यों के उदाहरण है !

इसी देशावकासिक व्रत के विषय में एक व्रतधारी ने आलोचना करते हुए कहा था : 'मैंने चार दिशा में ५०० K.M. से ज्यादा नहीं जाने की प्रतिज्ञा की थी, परंतु मुझे पूर्व दिशा में एक बार ६०० K.M. जाना पड़ा... चूंकि मेरे मित्र की शादी थी, उसकी बारात में जाना बहुत जरूरी था...मुझे उस दोष का प्रायश्चित्त दो !"

कहिए, मित्र की शादी की बारात में जाने के लिए व्रत तोड़ दिया ! यह निःसत्त्व और कायर लोग ही अतिचार लगाते हैं।

पहला अतिचार :

पहला अतिचार कैसे लगाता है व्रतधारी मनुष्य को, यह बताता हूं। मान लो कि उत्तर दिशा में ५० K.M. से ज्यादा दूर नहीं जाने का नियम किया है। अब एक दिन उसी दिशा में ६० K.M. दूर सोना, चांदी या दूसरी कोई वस्तु मिलती है। यदि वह मिलती है तो अच्छा अर्थलाभ होता है। वह सोचता है : 'यदि मैं ६० K.M. जाता हूं तो मेरे व्रत का भंग होता है, नहीं जाता हूं तो अर्थलाभ नहीं होता है। तो क्या करूं ? दूसरे विश्वसनीय मनुष्य को भेज़कर वह माल मंगवा लूं। अथवा चिट्ठी लिखकर भेज दूं...इससे व्रतभंग भी नहीं होगा और माल भी मिल जाएगा।' इस प्रकार सोचकर यदि वह माल मंगवाता है तो उसको अतिचार लगता है। व्रत दूषित होता है।

दूसरा अतिचार :

जिस प्रकार व्रतधारी मनुष्य, अपनी निश्चित मर्यादा से बाहर की वस्तु मंगवाने का उपक्रम करता है तो अतिचार लगता है, वैसे निश्चित मर्यादा से बाहर वस्तु भेजने का उपक्रम करता है, तो भी अतिचार लगता है।

ये दोनों अतिचार लगने का मूल कारण होता है लोभ, लालच और तीव्र स्पृहा। परंतु व्रतभंग नहीं करता है... । रास्ता निकाल लेता है।

प्रश्न : जिस प्रकार हम टेक्स भरने में रास्ता निकालते हैं वैसे ?

महाराजश्री *: वैसा ही समझ सकते हो !* फर्क *इतना ही है कि आप के* ऊपर सरकार ने टेक्स थोपा है, यहां व्रतधारी ने स्वेच्छा से व्रत को स्वीकार किया है ! व्रत, टेक्स की तरह थोपा गया हो और मनुष्य रास्ते खोजे बचने के, तब तो ठीक है, परंतु स्वेच्छा से व्रत लेने के बाद, भय अथवा लोभ की वजह से व्रत को अतिचार लगाए, वह अच्छा नहीं है।

क्रमशः

राजा सम्प्रति

"अजी, हार गए, ऐसा ही कहिए । अन्यथा वे देव-गन्धर्व मनुष्यों के दृष्टिपथ से अदृश्य क्यों हो जाते ? इसके सुन्दर संगीत के सम्मुख लज्जित होकर ही वे बेचारे छुप गए हैं ।" इस प्रकार एक कवि के कहने पर सभी सभासद हँस पड़े ।

राजा ने भी हँसते हुए कहा :– "यदि वह इतना सुन्दर गाता है तो यहां दरबार में भी बुलाकर उसका संगीत कराना चाहिए ।"

यह सुनते ही एक सामन्त ने कहा :– "महाराज ! यदि आप उसके मुख से एकबार मधुर संगीत सुन लेंगे तो उसे अपने यहाँ से जाने ही न देंगे और बारम्बार उसका संगीत सुनने की आपकी आतुरता बढ़ती ही चली जायगी ।"

"तब तो हम उसे अच्छा वेतन देकर दरबार में नौकर ही रख लेंगे ।" राजा ने कहा ।

इसपर दूसरा सामन्त कहने लगा :– "महाराज ! उसे यदि भेट में भी कुछ दिया जाता है तो वह स्वीकार नहीं करता, तब भला नौकरी की तो बात ही क्या ?"

"तो क्या वह नौकरी करना नहीं चाहता ?" राजा ने उत्सुकता से पूछा ।

"हाँ, वह अत्यन्त निर्लोभी और त्यागवृत्तिवाला गायक है; महाराज ! भोजनमात्रं से ही सन्तोष मानता हुआ प्रभु-भक्तिके रूपमें अपनी संगीतधारा प्रवाहित कर देता है ।"

"ठीक है ! तब तो हम भी अवश्य उसका संगीत सुनेंगे । यों कहकर महाराज ने प्रतिहारी को आज्ञा दी कि वह तुरन्त उस गायक को दर्बार में उपस्थित करे; किन्तु वह अन्धा था; अतएव उसके लिए एक चिकपर्दा डलवाया गया ! क्यों कि राजालोग हीन अङ्गवाले पुरूषों का मुख नहीं देंखते । दूसरी ओर पर्दे में रानियों के बैठने की व्यवस्था की गई । इतने ही में वह सितारवाला गायक भी आ पहुँचा । राजाको न दिखाई दे, इसप्रकार प्रतिहारी ने उसके

बैठने का प्रबन्ध कर दिया ।

इसके बाद गन्धर्वों के सङ्गीतामृत को भी लज्जित करनेवाला उसका सङ्गीत आरम्भ होनेवाला था । सभाभवन में हजारों मनुष्य श्रोतागण उपस्थित होते हुए वहाँ इतनी शान्ति व्याप्त हो रही थी कि सुई के गिरने की आवाज भी सुनाई देती । हजारों नेत्र उस अन्धे गायक की ओर लगे हुए थे ।

सितारवाला जिस समय की प्रतीक्षा कर रहा था, वह अब आगया था। जिसके लिए उसने इतना कठोर परिश्रम कर अनेक कष्ट सहे थे, उस विषम परीक्षा की अब कसौटी होनेवाली थी । आज का दिन उसके लिए बड़े ही महत्त्वका था । क्षणभर पश्चात् ही क्या होनेवाला है ? इसका उस सभा में किसी को पता तक नहीं था । फिर भी सितारवाला अपना ध्येय समझ रहा था । इसीलिए वह उच्चसे-उच्चतर सङ्गीत सुनाकर महाराज को प्रसन्न करने का इरादा रखता था । प्रयत्न करना उसके हाथ में था; बाकी फल तो परमात्मा या दैव के ही आधीन था ।

सितारवाले ने तैयार होकर क्षणभर में ही सबको आश्चर्य चकित करते हुए प्रभु-भक्तिमें वृद्धि करनेवाले अपने मधुर सङ्गीत की स्वर-धारा प्रवाहित करना आरम्भ किया ।

अपनी सम्पूर्ण कला-कुशलताका कौशल सितारवाले गायक ने इस गाने में उपयोग कर दिखाया । प्रभु-भक्ति के रस से ओत-प्रोत इस शान्त-रस पूर्ण गीत का अद्‌भुत प्रभाव पड़ा और सारी सभा उसकी सङ्गीत माधुरी सुनकर मुग्ध हो गई । गायक ने अपनी स्वर माधुरी के द्वारा वीर हृदयों मे भी प्रभु-भक्ति की रस धारा प्रवाहित करदी थी । यदि आँखे होती तो वह देख सकता कि जिस प्रकार पुँगी के स्वरपर मुग्ध हो जानेवाला सर्प एकाग्र-चित्त से डौलने लगता; और अपनी सुध-बुध भूल जाता है; अथवा वीणा के स्वर से लुब्ध हुआ हिरन जङ्गल से खिंचकर नगर में चला आता है, उसी प्रकार सारी सभा उस सङ्गीत को सुन मुग्ध हो रही थी । स्वयं सम्राट अशोक वर्द्धन भी उसके कण्ट की मधुरता, सङ्गीत की शैली और प्रभु-भक्ति से परिपूर्ण भावपर मुग्ध हो रहे थे; किन्तु महापुरूषों की प्रसन्नता या उनका क्रोध कभी व्यर्थ नहीं जाता । महाराज ने तुरन्त ही सितारवाले को 'वर' माँगने के लिए कहा ।

उसे अब अपना मनोरथ पूर्ण होने की शुभ आशा प्रतीत हुई । राजा

का वरदान शब्द श्रवणकर सितारवाले ने बड़े ही उत्साहपूर्वक कहा।

आर्य-गीति

प्रवल-प्रतापी नरपति, मौर्यवंशके आद्य पुरूप राजे !
चन्द्रगुप्त पृथ्वीपति, बिन्दुसार-सुत अशोकश्री गाजें ॥
पितु आज्ञा पालनकर जिसने लोचन अर्पण कीन्हें !
वह कुणाल आकर पितु सन्मुख काकिणी-वर याये ॥

इस प्रकार उसने वरदान में अपने वंशका वर्णन करते हुए "काकिणी" की याचना की । उसके यह शब्द सुनते ही महाराज एकदम चौंकपड़े । "ओहो ! कौन तू ? बेटा, कुणाल ?"

"हाँ, पिताजी ! आपकी आज्ञाका लेख देखकर ही जो अन्धा हो गया था । वही आपका पुत्र कुणाल !" सितारवाले ने अपना परिचय दिया ।

राजा ने तत्काल उठकर पर्दा हटा दिया और अपने प्रिय पुत्रको देखकर उनके नेत्रोंसे अश्रुधारा प्रवाहित होने लगी । उन्होंने कुणालको हृदय से लगाकर उसका सिर सूंधा और अपनी गोद में बिठाकर गद-गद कण्ठ से पूछा,–"बेटा ! यह सब कैसे हो गया ? कुछ भी समझ में नहीं आता । मैंने तो उस पत्र में तेरे लिए केवल पढ़ने-लिखने अध्ययन के लिए ही लिखा था, किन्तु फिर भी दुर्भाग्य ने बड़ाही अनर्थ कर डाला ।" यह दृश्य देखकर सम्पूर्ण सभा आश्चर्य-चकित हो गई । कहाँ एक साधारण अन्धा गवैया, और कहाँ युवराज कुणाल ! अहा, विधाताकी कैसी विचित्र लीला है ?"

पिताके वचन सुनकर कुणाल समझ गया कि, "पिताको मेरी अपर माता तिष्यरक्षिताके उस षड़यन्त्रका पता कैसे हो सकता है ? फिर भी अभी मुझे यहाँ उसकी चर्चा नहीं करती है ! मुझे तो केवल अपना काम बनालेना है । जब उसका मनोरथ निष्फल हो जायगा, तो वह स्वयं ही जीवनमृत जैसी हो जायगी । फिर उसे मरवाकर भी क्या करना है ।"

"पिताजी ! जो कुछ होनहार घटना थी, वह तो हो ही गई । उसमें अब हर्ष-शोकसे भी क्या लाभ हो सकता है ? जैसा मेरे भाग्यमें था, वैसा हुआ । अस्तु ।

"किन्तु हाय ! पुत्र ! उस भूलका मुझे रात-दिन पश्चात्ताप होता है । अब मैं उसका क्या प्रायश्चित्त करूँ ? बोल, बेटा ! तेरे लिए अब मैं क्या प्रिय कार्य करूँ ?"

"पिताजी ! मैंने आपसे बरदान में "काकिणी" की याचना की है ।

बस, वही मेरे लिए पर्याप्त है ।'' कुणालने कहा ।

''हे वत्स ! जब मैं तुझपर प्रसन्न हुआ हूँ तो तू कोई अच्छी वस्तु माँगले ! एक ''काकिणी'' मात्र तूने क्या माँगी ?'' राजाने काकिणी का अर्थ न समझ सकने के कारण उससे कहा ।

''देव ! युवराज ने कोई साधारण वस्तु नहीं माँगी है । वरन् इन्होंने तो आपके पास जो कुछ है, वह सब माँग लिया है ।'' मन्त्रीने खुलासा किया।

''तो क्या इसने राज्य माँगा है ?'' राजाने पूछा ।

''हाँ, देव ! 'काकिणी' राजपुत्रों का राज्य ही कहलाती है ।'' मन्त्रीने बताया ।

''किन्तु, पुत्र ! तू राज्य को लेकर क्या करेगा ? क्योंकि राज्य मिलनेपर भी नेत्रहीन होने से तुझे शासन दूसरे के हाथ में सौंपना पड़ेगा । मैंने तो तुझे पहले ही से राज्य देने का निश्चय किया था, किन्तु दुर्भाग्य ने मेरा यह मनोरथ निष्फल कर दिया ।'' राजा ने उदासचित्त होकर कहा ।

''पिताजी ! आप खेद न कीजिए । मैं आपको एक बधाई देता हूँ कि आपके पौत्र का जन्म हो चुका है । वह राज्य करेगा ।'' कुणालने राजाकी शङ्का का समाधान किया ।

''क्या तेरे यहाँ पुत्र का जन्म हुआ है ? अच्छा ! कब हुआ है, बेटा !'' राजा ने हर्षित होते हुए पूछा !

''पिताजी ! 'सम्प्रति'का जन्म अभी कुछ मास पहले हुआ है !''

''क्या कहा ? अभी कुछ मास पहले ? तो अब वह कहाँ है ?''

''आपके दिए हुए मेरे ग्राम में !''

दूसरे ही दिन राजा ने तत्काल घुड़-सवारों के साथ मन्त्रियों को बालकुमार को लिवाने के लिए भेज दिया ! फलतः थोड़े ही दिनों में उनके साथ बालकुमार, शरतकुमारी, सुनन्दा और चन्दा आदि समस्त परिवार पाटलीपुत्र आ पहुँचा । राजाने बड़े ही समारोह के साथ बालकुमार का प्रवेश महोत्सव मनाया और उसका नाम भी ''सम्प्रति'' ही कायम रखा ।

दस दिन बीतने के बाद महाराज अशोकवर्द्धन ने उस स्तन-पान करनेवाले बालक ''सम्प्रतिकुमार'' को महोत्सवपूर्वक पाटलीपुत्र के सिंहासन पर अधिष्ठित कर दिया । इसप्रकार सुनन्दा की अनेक दिनों की सोची हुई मनोकामना परिपूर्ण हुई ।

क्रमशः

उन्होंने खोजी है २९८ जैन जातियां

महावीर सांगलीकर

जैन धर्म और जैन समाज के वारे में जनमानस में कई गलत धारणाएं हैं। जैसे जैन धर्म मारवाड़ी/गुजराती बनियों का धर्म है, जैन धर्मानुयायी पैसे वाले होते है आदि लेकिन 'इन्स्टिटयुट फॉर जैन सोशल स्टडीज, पुणे' के संचालक प्रोफेसर प्रदीप फलटणे ने अपने अथक परिश्रम से जो शोधकार्य किया है, उससे साबित होता है कि जैन धर्म केवल बनियों का धर्म नहीं है और न ही इसके अनुयायी केवल राजस्थानी/गुजराती होते है।

भारत के हर प्रदेश के मूलनिवासियों मे कई ऐसी जातियां है जो जैन धर्मानुयायी हैं। प्रोफेसर प्रदीप फलटणे का शोधकार्य दिखा देता है कि संख्याबल की दृष्टि से सर्वाधिक जैन धर्मानुयायी किसान है, न कि व्यापारी। यह किसान जैन जातियां बंगाल, बिहार, म.प्र., कर्नाटक, महाराष्ट्र, तामिलनाडू, पंजाव, हरियाणा, गुजरात आदि प्रदेशों में बड़ी संख्या में दिखायी देती हैं। इनमें चतुर्थ, सराक, जैन जाट आदि कई जातियां प्रमुख हैं। मध्यप्रदेश के दमोह जिले में दो लाख कुर्मी किसान जैन धर्मानुयायी हैं। जैन समाज के दो महान आचार्य विद्यासागरजी और विजयइंद्रदिन्न सूरीजी किसान जैन समाज की ही देन हैं। प्रसिद्ध जैन मुनि मायाराम भी जैन जाट किसान परिवार की देन हैं।

किसानों के साथ-साथ कई कारीगर या किसी विशेष व्यवसाय से जुड़ी हुई जैन धर्मानुयायी जातियां भी पूरे भारत में दिखायी देती हैं। ऐसी जातियों की संख्या अनगिनत हैं। कुछ प्रमुख जातियों के नाम इस प्रकार है– कासार (चुडियां वाले, जो पूरे महाराष्ट्र मे फैले हुए है), कलार (जो जैन होने से पहले दारू वनाने का व्यवसाय करते थे, यह समाज पूर्व महाराष्ट्र, दक्षिण मध्यप्रदेश और उड़ीसा मे फैला हुआ है), नाई (हजाम), वुनकर, भावसार (कपड़े रंगाने वाले/दर्जी), कुम्हार, सुतार, सैतवाल (दर्जी का काम करने वाले, यह महाराष्ट्र की सबसे अधिक संगठित जैन जाति है), सदगोप (पशुपालक) आदि।

प्रोफेसर प्रदीप फलटणे का शोधकार्य यह भी बताता है कि ब्राह्मणों की १५ जातियां जैन धर्मानुयायी हैं । जिनमें जैन ब्राह्मण, भोजक, गौड, तपोधन, रावल, उपाध्ये, इंद्र आदि जातियां प्रमुख हैं । इतना ही नहीं, आदिवासियों में भी जैन धर्मानुयायी जातियां पायी जाती हैं, जैसे मीणा, कुरुम्ब, संथाल, भिल्ल आदि जातियों में अलग जैन धर्मानुयायी उपजातियां होती हैं । मध्यप्रदेश की धर्मपाल और वीरवाल यह दो जातियां पूर्व में हिंदु अछूत जातियां थी, लेकिन जैन धर्म अपनाकर उन्होंने अपना सामाजिक और आर्थिक उत्थान कर लिया है । वर्तमान में यह दोनों जातियां मध्यप्रदेश के जैन समाज की प्रमुख जातियां है ।

यह पुछने पर कि यह सब जातियां जैन समाज की मुख्य धारा से दूर क्यों हैं, प्रोफेसर फलटणे कहते है कि जिसे आप मुख्य धारा कहते है, वह वास्तव में अपनी जाति और संप्रदाय के दायरे में बंद मुट्ठीभर लोगों की धारा है । आज जैन धर्म पर केवल दो-तीन बनियां जातियां हावी हो गयी हैं । इनकी तथाकथित 'अखिल भारतीय' संस्थाओं और संगठनों में किसी एक जाति और एक प्रदेश के लोगों का राज होता है । यह लोग बातें विश्वधर्म की करते हैं । लेकिन इनका विश्वधर्म अपनी जाति तक ही सीमित होता है । इसलिए उनकी धारा को मुख्य धारा कहना कदापि उचित नहीं है । वास्तव मे यह जो मूलनिवासी जैन समाज है उनकी धारा को ही मुख्य धारा कहा जा सकता है । धीरे-धीरे यह समाज राष्ट्रीय स्तर पर संगठित हो रहा है और अपनी पहचान बना रहा है । अब वह दिन दूर नहीं जब जैन समाज के बारे में सारी गलतफहमियां दूर हो जायेंगी और वास्तव मुख्य धारा लोगों के सामने आयेगी ।

फिलहाल प्रोफेसर प्रदीप फलटणे अपने इस शोधकार्य को जारी रखे हुए हैं । अब तक उन्होंने २९७ जैन जातियों के बारें में विस्तृत जानकारी एकत्रित की है । वे पाठकों से निवेदन करते हैं कि इस जानकारी को परिपूर्ण बनाने के लिए उन्हें अपने पास उपलब्ध विभिन्न जैन जातियों के बारे में जानकारी भेजने का कष्ट करें । ऐसी जानकारी भेजनेवालों के नाम प्रोफेसर फलटणे की आगामी पुस्तक 'जैन समाज : एक खोज' में प्रकाशित किए जायेंगे । उनका पता है- प्रोफेसर प्रदीप फलटणे, संचालक, इनस्टिटिउट फॉर जैन सोशल स्टडीज, १६३ यशवंत नगर, तलेगांव स्टेशन, पुणे - ४१० ५०७ ।

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007

English

1.	*Bhagavati-sūtra* – Test edited with English translation by K.C. Lalwani in 4 volumes;		
	Vol-I (śatakas 1-2)	Price : Rs.	150.00
	Vol-II (śatakas 3-6)		150.00
	Vol-III (śatakas 7-8)		150.00
	Vol-IV (śatakas 9-11)		150.00
2.	James Burges – *The Temples of Śatruñjaya*, Jain Bhawan, Calcutta, 1977, pp. x+82 with 45 plates [It is the glorification of the sacred mountain *Śatruñjaya*.]	Price : Rs.	100.00
3.	P.C. Samsukha – *Essence of Jainism* translated by Ganesh Lalwani.	Price : Rs.	10.00
4.	Ganesh Lawani – *Thus Sayeth Our Lord*		10.00

Hindi

5.	Ganesh Lalwani – Atimukta (2nd edn.) translated by Shrimati Rajkumari Begani	40.00
6.	Ganesh Lalwani – Śraman Samskriti ki Kavitä	20.00
7.	Ganesh Lalwani – Nílänjanä translated by Shrimati Rajkumari Begani	30.00
8.	Ganesh Lalwani – Candana-Mürti, translated by Shrimati Rajkumari Begani	50.00
9.	Ganesh Lalwani – Vardhamän Mahavír	60.00
10.	Ganesh Lalwani – Barsät kí Ek Rät	45.00
11.	Ganesh Lalwani – Pañcadaśí	100.00
12.	Rajkumari Begani – Yädó ke Äine më	30.00

Bengali

13.	Ganesh Lalwani – Atimukta	40.00
14.	Ganesh Lalwani – Śraman Samskrti Kavitä	20.00
15.	Puran Chand Shyamsukha – Bhagavän Mahävír O Jaina Dharma	15.00

तित्थयर

जिन धर्म और संस्कृति की महक से सुरभित करने वाली पत्रिका तित्थयर (मासिक) के आजीवन सदस्य बनें ।

आजीवन सदस्यता शुल्क- एक हजार रूपये

JAIN JOURNAL

One of its Kind, most Valuable, Quaterly research Journal on Jainism

Life Membership – Rs. 2000/-
Yearly – Rs. 60/-

श्रमण

बंगाल की भूमि में जैन संस्कृति के गौरव का प्रतीक श्रमण (बंगला) के आजीवन सदस्य बनिये ।

आजीवन सदस्यता शुल्क- पाँच सौ रूपये
वार्षिक शुल्क- तीस रूपये

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का है।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College
Calcutta

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG Pvt. Ltd.

(Formerly : Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain- *Chairman*

A-42, Mayapuri, Phase-1, New Delhi - 110064
Phone : 5144496, 5131086, 5132203
Fax : 91-011-5131184
E-mail : laxman.jariwala@gems.vsni.net.in

जैन धर्म सर्वथा स्वतन्त्र धर्म है
यह किसी का अनुकरण नहीं है ।

Dr. Jacobi

卐

R. C. BOTHRA & COMPANY PVT. LTD

Steams Agents, Handling Agents,
Commission Agents & Transport Contractors

Regd. Office

2, Clive Ghat Street,, (N. C. Dutta Sarani)
6th Floor, Room No. 6, Phone : 220-6702, 220-6400
Fax : (91) (33) 220-9333, Telex : 21-7611 RAVI IN

Vizag Office

28-2-47 Daspalla Centre
Vishakhapatnam - 530020, Phone : 69208/63276
Fax : 91-0891-569326, Gram : BOTHRA

N. K. JEWELLERS
Gold Jewellery & Silver Ware Dealers
2, Kali Krishna Tagore Street, Calcutta - 700 007

IN THE MEMORY OF LATE
Jitendra Singh Nahar, Rabindra Singh Nahar
40/4A, Chakraberia South, Calcutta - 700 020
Phone : (O) 244-1309, (R) 475-7458

SUDERA ENTERPRISES PVT. LTD.
1, Shakespeare Sarani, Calcutta - 700 071
Phone : 282-7615/7617/2726
Gram : Sudera

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Calcutta - 700 054
Phone : 352-8940/334-4140 (R) 352-8387/9885

SPACE 'N' WINGS
Travel Agents
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 242-7806/8835/5852
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Phone : (O) 250623, (R) 239-6823

SANA FASHIONS
A20/21 Laghu Udyog
I.B. Patel Road, Goregaon East, Bombay - 400 063

H. R. ELECTRICALS
Dealers in Electrical Switch gear, starter & spare parts
Siemens, English Electric L.T/ L.K. B.C.H., etc.
32, Ezra Street, 7th Floor, Room No - 712A
South Block, Calcutta - 700 001
Room No - 314, 3rd Floor
Phone : (O) 255009/1299, (R) 660-4332

VIJAY AJAY
9, India Exchange Place
Room No - 4/2, 4th Floor, Calcutta - 700 001
Phone : (O) 220-6974/8591/7126, 243-4318
Fax : 220 6974

MAHASINGH RAJ MEGH RAJ BAHADUR
Goal Para, Assam

KASTURCHAND VIJAYCHAND
155, Radha Bazar Street, Calcutta - 700 001
Phone : 220-7713

SURAJ MAL TATER
C/o Surajmal Chandmal
137, Bipin Behari Ganguli Street
Calcutta - 700 012
Phone : Shop - 227-1857 (R) 238-0026

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Calcutta - 700 007
Phone : 238-8677/1647, 239-6097

VISHESH AUTOMATIONS PVT. LTD.
Dealers of IBM, HCL-H.P. Seimens & Toshiba
16D, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Phone : 476-2994, 455-0137
Fax : 91-33-4552151

ELECTRO PLASTIC PRODUCTS (P) LTD.
22, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 073
Phone : 26-3028, 27-4039

MUSICAL FILMS (P) LTD.
9A, Explanade East, Calcutta - 700 069

S. VIJAY CHAND
Vinay Textiles
Whole Sale Merchants
113B Manohar Das Katra, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 238-1388, (R) 247-6105/2750
'Guddi' 10, Jamunalal Bajaj Street
2nd Floor, Calcutta - 700 007

जो हिंसात्मक प्रवृति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments & Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Calcutta - 700 007
Phone : (O) 238-4755, (R) 238-0817

KUMAR PAL BAHADUR SINGH DUGAR
2F, Garcha First Lane, Calcutta - 700 019
Phone : (O) 278841/7539, (R) 475-9712/2807

D. K. SYNTHETICS
Whole Sale Dealer
180, Mahatma Gandhi Road
Mullick Kothi, 1st Floor, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 232-6040, (R) 684181

JAYSHREE EXPORTS
A Govt. of India Recognised Export House
105/4 Karaya Road, Calcutta - 700 017
Phone : 247-1810/1751, 240-6447
Fax : 91-33247-2897

MAHAVIR COKE INDUSTRIES (P) LTD.
1/1A Biplabi Anukul Chandra Street
Calcutta - 700 072, Ph : 215-1297, 26-4230/4240

APRAJITA
Air Conditioned Market
Calcutta - 700 071, Ph : 282-4649, Resi : 247-2670

AAREN EXPORTERS
12A, Netaji Subhas Road, 1st Floor, Room No. 10
Calcutta - 700 001, Phone : 220-1370/3855

विशुद्ध केशर तथा मैसूर की सुगन्धित चन्दन की लकड़ी,
वरक एवं धूप के लिये पधारें
SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Calcutta - 700 007, Phone : 239-1408

S. P. SYNTHETICS
House of Exclusive Shirtings
38, Armenian Street, 1st Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 25-7312, Shop : 230-1180, Resi : 241-6831

SIDDHA NIKETAN
Goldel Chance to book flat in Jaipur
8, Ho Chi Minh Sarani
Calcutta - 700 071, Ph : 282-2164/4577

M/S. METROPOLITION BOOK COMPANY
93, Park Street, Calcutta - 700 016
Ph: 226-2418, Resi : 464-2783

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No. 4
Calcutta - 700 071, Ph: 296256/8730/1029
Resi : 2476526/6638/2405126
Telex : 021 2333, ARBI IN, Fax : 226-0174

G. M. SINGHVI
M/S. WILLARD INDIA LIMITED
Mcleod House
13, Netaji Subhas Road, Calcutta - 700 001
Phone : (O) 248-7476-8, (R) 475-4851/1483
Fax : 248-8184

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box : 16127, Cal - 17
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax : (033) 240 0098, 247 1833

JAYANTI LAL & CO.
20, Armenian Street, Calcutta - 700 001
Ph: 25-7927/3816/6734, Resi : 240-0440

P. C. JAIN
B-14, Sarvodaya Nagar, Kanpur - 208005
Ph: 29-5552/29-5955

UJJWAL TRADING PVT. LTD.
Regd Office :11, Clive Row, 3rd Floor, Room no. 14,
Cal -700 001, Ph: (O) 242-4131/4756

HARAK CHAND NAHATA
21, Anand Lok, New Delhi - 110049
Ph : 646-1075

S.C. SUKHANI
Santiniketan Building, 4th Floor, Room No. 14
8, Camac Street, Calcutta - 700 017
Phone : (O) 242-0525 (R) 239-9548
Fax : 242-3818

MAUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrellas
45, Armenian Street, Calcutta - 700 007
Ph : Shop- 242-4483/9181, (O) 238-1396/1871
Fax : 231-2151/666-6013

A.C. LOCKS CO.
22 Bonfield Lane, Calcutta - 700 007

CHUNNILAL ASHOK KUMAR
30, Cotton Street, 3rd Floor
Calcutta - 700 007, Phone : 238-7764
Resi : 666-4541, 530-9286

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Calcutta - 700 007
Phone : 238-7015, 232-4087/4978

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

JAICHAND VINODKUMAR
Exclusive Wholesaler of Fancy Sarees
1/1, Noormal Lohia Lane, 2nd Floor, Calcutta - 700 007
Phone : 238-3328/9678, 239-3450
Resi : 247-6785/7086, 40-0325/3995
Fax : 239-3450, 247-7526
Telex : 217761 JVS-IN Gram MINNI-BROS

KUSUM CHANACHUR
Prop. Churoria Brothers
Mfg. by : K. C. C. Food Product
P.O. Ajimganj, Dist. : Murshidabad
Phone: STD (03483)-53234
Calcutta- 230-0432, 231-2802

SURANA MOTORS PVT. LTD.
24A, Shakespeare Sarani
84 Parijat, 8th Floor, Calcutta - 700 071
Phone: 2477450/5264

KALURAM RAMLAL
40A, Armenian Street, Calcutta - 700 001
Phone : 238-9089/239-1264

MOTILAL BENGANI
CHARITABLE TRUST
12 India Exchange Place
Calcutta - 700 001, Phone : 220-9255

A.M. BHANDIA & CO.
23/24 Radha Bazar Street, Calcutta - 700 001
Phone : 242 1022/6456/555-4315 (R)

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Calcutta, Phone : 245-1612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Calcutta - 700 073

ABHAY SINGH SURANA
Surana House
3, Mango Lane, Calcutta - 700 001
Phone : 248-1398/7282

SATISH KUMAR SHYAMSUKHA
11, Pollock Street, Calcutta - 700 001

NARENDRA JAIN
Super Iron Factory
7, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 001
Phone : 225-3785/0069
Works : 665-3144
Fax : 91-33-2250198, 943333, 954321

ACARDIA SHIPPING LTD.
22, Tulsiani Chambers
Nariman Point, Bombay - 400 021

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue
Calcutta, Phone : 464-1186

CALTRONIX
12, India Exchange Place
3rd Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 220-1958/4110

BOTHRA & BOTHRA
12, Noormal Lohia Lane
2nd Floor, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 230-0216, (R) : 259657, 259312

GRAPHIC PRINT & PACK
12C, Lord Sinha Road, Calcutta - 700 071
Phone : (O) 242-4916/8380
Resi : 343-8302, Pager : 6902-315070

Dr. ANJULA BINAYIKA
M.D. DND, M.R.C.O.G (London)
12, Prannath Pandit Street
Calcutta - 700 025, Phone : 474-8008

ABHANI BACHHRAJ
Fancy Saree Emporium
156, J.L. Bajaj Street, 1st Floor, Calcutta - 700 007
Ph : Shop- 238-6582, 239-0079
Resi- 483988/2573

CHOPRA TYRES
Unit of Fatehchand Chopra & Family
Tyre Resoler
Sakunta Road, Agartala, (Tripura)

ASHOK TRADING COMPANY
Authorised Distributors of
J.K. Engineering Steel Files & Drills I.T. Cuttings, Tools
Miranda Tools & (Hacksaw Blades) BIPICO-ECLIPSE
18C, Sukeas Lane, Calcutta - 700 001
Ph : 242-2345/4461

BHANWARLAL KARNAWAT
BEEKY TAI FEB UDYOG PVT. LTD.
City Centre, Room No. 534 & 535, 5th Floor
16, Synagauge Street, Calcutta - 700 001
Ph : 238-7281, 230-1739

AKHILESH KUMAR JAIN
JUTE BROKER
9, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Phone : 221-4039, 210-2760, (R) : 660-1604

COMPUTER EXCHANGE
'Park Centre' 24 Park Street
Calcutta - 700 016, Phone : 295047, 299110

PARSAN BROTHERS
Diplomatic & Bonded Stores Suppliers
18-B, Sukeas Lane, Calcutta - 700 001
Ph : (O) 242-3870/4521, Fax : 242-8621

J. KUTHARI PVT. LTD.
12, India Exchange Place
Calcutta - 700 001
Ph: 220-3142, Resi : 475-0995, 476-1803
Fax : 221-4131

SATKAR CONSTRUCTION PVT. LTD.
Gujrat Mansion, 5th Floor
14, Bentick Street, Calcutta - 700 001
Ph : 248-4730/6256/9867, Direct : 248-6477/6169
Resi : 478-0765/458-3397, Mobile : 98300-30618
Fax : 248-6169

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203/1 M.G. Road, Calcutta - 700 007
Phone : (O) 238-9356/0950
(Fact) 557-1697/7059

DUGAR & CO. JUTE BROKER
12, India Exchange Place, (3rd Floor)
Calcutta - 700 001
Phone : 220-1283/0813, Resi : 555-6039

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Calcutta - 700 017
Phone : 242-5234/0329

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street
Calcutta - 700 001, Phone : 953902/252759
Fax : 033-252902

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd.
Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Calcutta - 700 001
Phone : 220-4779/0131/5721

SUNDERLAL DUGAR
R.D.B. Industries Ltd.
Regd. Off : Bikaner Building
8/1 Lal Bazaar Street, Calcutta - 700 001
Ph : 248-5146/6941/3350, Mobile : 9830032021
Office : Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Calcutta - 700 001, Ph : 220-2389/3570/3569

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Calcutta -700068
Phone: 4720610

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Calcutta - 700 071
Phone : 282-8181

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane, Calcutta - 700 026
Phone : 476-1533

APARAJITA BOYD
9/10, Sitanath Bose Lane, Salkia
Howrah - 711 106, Phone : 665-3666/2272

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Calcutta - 700 001
Ph: (O) 220-8105/2139, Resi : 244-0629/0319

B. W. M. INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi-221401 (U.P.)
Ph : (O) 05414-25178, 25778, 25779
Bikaner Ph : 0151-522404, 25973
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151- 61256 (Bikaner)

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Ph: (R) 455-3586

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Calcutta -700 007, Ph: (033) 230-1329, 232-1033
Fax: 91-33-2302413

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Calcutta - 700 020
Ph: 247-6874, Resi : 244-3810

GRAPHITE INDIA LIMITED
Pioneers in Carbon/Graphite Industry
31, Chowranghee Road, Calcutta -700016
Ph: 2264943, 292194, Fax: (033) 2457390

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable : SWADHARMI, Fax : (033) 2209755
Resi : 464-3235/1541, Fax : (033) 4640547

PRITAM ELECT. & ELECTRONICS PVT. LTD.
22, Rabindra Sarani, Shop No. G-136
Calcutta - 700 073, Ph: (033) 262210

मथुरा के जैन स्तूप इस बात के
स्पष्ट और अकाट्य प्रमाण हैं कि
जैन धर्म प्राचीन है और
प्रारम्भ में भी वर्तमान स्वरूप में था ।

Shri Vinsent Smith

卐

RADHIKAS

ICE CREAM PARLOUR & FAST FOOD CENTRE

SHIVAM CHAMBERS
53, Syed Amir Ali Avenue
(Near Ice Scating Rink)
Calcutta - 700 019
Phone : 247-2602

THE PURE VEGETARIAN PARLOUR FOR CHOICEST & TASTIEST IDLIS, DOSAS, BURGERS, CHATS AND MANY MORE DELICIOUS FOODS WITH VARITIES OF ICE-CREAMS.

जैन संस्कृति मनुष्य संस्कृति है,
जैन दर्शन भी मनुष्य दर्शन ही है,
जिन देवता नहीं थे, किन्तु मनुष्य थे ।

Prof. Harisatya Bhattacharya

We are, always ready to most the Exact type of your requirement

AUCKLAND INTERNATIONAL LTD.

(UNIT : AUCKLAND JUTE MILLS)

'KANKARIA ESTATE'

6, Little Russel Street
Calcutta - 700 001

A Recognised Export House
Cable : SWANAUCK, CALCUTTA
Telex : 21-2396 AUCK IN
Codes : BENTLEY'S SECOND
Phone : 29-2621, 2623, 7199, 7698, 7710

Registered Office &
'JUTE MILL'
At Jagatdal, 24 Parganas
Phone : BHATPARA 2757, 2758 & 2038

एतिहासिक सामग्री से यह सिद्ध होता है कि आप से पांच हजार वर्ष पहले भी जैन धर्म की सत्ता थी ।

Dr. Prannath (Historian)

GYANI RAM HARAKH CHAND SARAOGI CHARITABLE TRUST

P-8, Kalakar Street
Calcutta - 700 007
Phone : 239-6205/9727

Founders of

Shri Gyaniram Harakchand Saraogi College
of Arts & Commerse
Sujangarh

Shri Gyaniram Saraogi Homeo Hall

Shri Gyaniram Saraogi Physiotherapy Centre

भागवत पुराण के अनुसार
ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक हैं ।

Shri Radha Krishnan

HINDUSTAN GAS & INDUSTRIES LTD.
ESSEL MINING & INDUSTRIES LTD.

Registered Office
"Industry House"
10, Camac Street, Calcutta - 700 017
Telegram : 'Hindogen' Calcutta
Phone : (033) 242-8399/8330/5443
Fax : (91) 33 2424998/4280

Manufacturers of
Engineers' Steel Files & Carbon Dioxide Gas
At Tangra (Calcutta)
IronOre and Manganese Ore Mines
In Orissa
S. G. Malleable & Heavy Duty Iron Castings
At Halol (Gujrat)
Ferro Vanadium and Ferro Molybdenum
At Vapi (Gujrat)
High Purity Nitrogen Gas
At Mangalore
H.D.P.E./P.P. Woven Sacks
At Jagdishpur (U.P.

सम्यग्दर्शन के बिना ज्ञान नहीं होता है। ज्ञान के बिना चरित्र के गुण नहीं होते। गुणों के बिना भक्ति नहीं होती और भक्ति बिना निर्वाण शाश्वत् आत्मानन्द प्राप्त नहीं होता।

G.C. Jain

A-40 N.D.S.E - II
New Delhi - 110049
Tel : 625-7095/0330

WB/NC - 330

VOL XXII No. 9

'Titth ayara'

Registered with the registered
of Newspapers for India under
No. R.N. 3018/77

December 1998

अरिहंते सरणं पवज्जामि
सिद्धे सरणं पवज्जामि
साहु सरणं पवज्जामि
केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि

"आत्मा के साथ ही युद्ध करो, बाहरी दुश्मनों
के साथ युद्ध करने से क्या लाभ? आत्मा को आत्मा
के द्वारा ही जीत कर मनुष्य सच्चा सुख पा सकता है।"

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225